

॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

ततःपार्थसमासाद्यपतंगइवपावकं ॥ पंचत्वमगमत्सौतिर्द्वितीयेहनिदारुणः ॥ २१ ॥ हतेकर्णतुर्कौरव्यानिरुत्साहाहतौजसः ॥ अक्षौहिणीभिस्तिस्त्रभिर्मद्रेशंप
र्यवारयन् ॥ २२ ॥ हतवाहनभूयिष्ठाःपांडवापियुधिष्ठिरं ॥ अक्षौहिण्यानिरुत्साहाःशिष्टयापर्यवारयन् ॥ २३ ॥ अवधीन्मद्राजानंकुरुराजोयुधिष्ठिरः ॥ तस्मिं
स्तदार्धदिवसेकृत्वाकर्मसुदुष्करं ॥ २४ ॥ हतेशल्येतुशकुनिंसहदेवोमहामनाः ॥ आहत्तारं कलेस्तस्यजघानामितविक्रमः ॥ २५ ॥ निहतेशकुनौराजायात्तरा
ष्टःसुदुर्मनाः ॥ अपाक्रामद्रदापाणिर्हतभूयिष्ठसैनिकः ॥ २६ ॥ तमन्वधावत्संकुद्धोभीमसेनःप्रतापवान् ॥ हदेद्वैपायनेचापिसलिलस्थंददर्शतं ॥ २७ ॥ हतशि
ष्टेनसैन्येनसमंतात्पर्यवार्यतं ॥ अथोपविविशुद्धं दृष्ट्वा पंचपांडवाः ॥ २८ ॥ विगात्सलिलं त्वाशुवाग्बाणैर्भृशविक्षतः ॥ उत्थायसगदापाणिर्युद्धाय
समुपस्थितः ॥ २९ ॥ ततःसनिहतौराजायात्तराष्ट्रमहारणे ॥ भीमसेनेनविक्रम्यपश्यतांयुधिर्वीक्षितां ॥ ३० ॥ ततस्तत्पांडवंसैन्यंप्रसुप्तं शिविरेनिशि ॥ निहत
द्रोणपुत्रेणपितुर्वधमसृष्यता ॥ ३१ ॥ हतपुत्राहतबलाहतमित्रामयासह ॥ युयुधानसहायेनपंचशिष्टास्तुपांडवाः ॥ ३२ ॥ सहैवरुपभोजाभ्याद्रौणिर्युद्धादमु
च्यत ॥ युयुत्सुश्चापिकौरव्योमुक्तःपांडवसंश्रयात् ॥ ३३ ॥ निहतेकौरवेद्रेतुसानुबंधेसुयोधने ॥ विदुरःसंजयश्चैवधर्मराजमुपस्थितौ ॥ ३४ ॥ एवंतदभवद्युद्ध
महान्यष्टादशप्रभौ ॥ यत्रतेयुथिवीपालाःस्वर्गमावसन् ॥ ३५ ॥ वैशंपायनउवाच शृण्वतांतुमहाराजकथांतांलोमहर्षणां ॥ दुःखशोकपरिक्लेशा
दृष्णीनामभवंस्तदा ॥ ३६ ॥ इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअनुगीतापर्वणिवासुदेववाक्येषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

तद्भागिनेयनिधनंतत्वेनाचक्ष्वमेप्रभो ॥ ८ ॥

कथयन्नेवेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥